بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 13.10.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

मुझपर और मेरी जमाअत पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुननबिय्यीन नहीं मानते, यह हम पर घोर आरोप है। हम जितनी विश्वास की शक्ति, विवेक और बुद्धिमत्ता के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अम्बिया मानते हैं तथा विश्वास रखते हैं इसका लाखवाँ अंश भी दूसरे लोग नहीं मानते।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿الأحزاب: ٤٠﴾

इस आयत का अनुवाद यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं बल्कि वे अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के ख़ातम हैं और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को भली भांति जानने वाला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान में समय समय पर किसी न किसी बहाने से अहमदियों के विरुद्ध राजनेता भी और उलमा भी अपना ग़ुब्बार निकालते रहते हैं। उनके विचार में यह सबसे सरल नीति है क़ौम को अपने पीछे चलाने और अपना सहमत बनाने की और ख्याति प्राप्त करने की और सबसे बड़ा हथियार जो मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने के लिए प्रयोग हो सकता है, वह ख़त्म-ए-नबुव्वत का हथियार है। इस प्रकार जब भी किसी राजनीतिज्ञ पार्टी की छवि बिगड़ रही हो, जब भी किसी राजनेता की ख्याति का ग्राफ़ गिर रहा हो अथवा स्तर कम हो रहा हो, जब भी तथाकथित धार्मिक संगठन राजनीति ख्याति प्राप्त करना चाहें, दूसरी तंज़ीम अथवा दूसरे राजनीति संगठन को नीचा दिखाना चाहें तो अहमदियों के साथ उनके सम्बंधों को जोड़ कर यह कहते हैं कि देखो, यह घोर अन्याय होने लगा है कि विदेशी शक्तियों के प्रभाव में ये लोग अहमदियों को मुसलमानों में शामिल करना चाहते हैं जबकि अहमदी, उनके विचार के अनुसार ख़त्म-ए-नबुव्वत के इन्कारी हैं। ये तथाकथित इस्लाम का दर्द रखने वाले कहते हैं कि हम रिसालत की मर्यादा पर आँच नहीं आने देंगे और कभी यह अन्याय होने नहीं देंगे। अपने राजनैतिक एजैन्डे में प्रत्येक के, प्रत्येक के अपने निजी स्वार्थ हैं परन्तु इनमें ज़बरदस्ती अहमदियों को घसीटा जाता है क्यूँकि यह बड़ा आसान मामला है। ग़ैर सरकारी असम्बली के सदस्य भी तथा सरकारी एसम्बली के सदस्य भी बढ़ बढ़ कर अहमदियों के विरुद्ध बोलते हैं। अतः पिछले दिनों पाकिस्तान की नैशनल एसम्बली में एक संवैधानिक परिवर्तन के शब्दों में बदलाव जो राजनैनिक पार्टी अथवा सरकारी पार्टी अपने स्वार्थ के लिए कर रही थी उसके विषय में यही कुछ हमें देखने में आया है। जहाँ तक अहमदिया जमाअत का मामला है, न ही हमने किसी विदेशी शक्ति से यह कहा है कि हमें पाकिस्तानी एसम्बली के संविधान में बदलाव करके क़ानून और संविधान की दृष्टि में मुसलमान बनवाया जाए, न ही हमने पाकिस्तानी सरकार से कभी इस चीज़ की भीख मांगी है, न ही हमें किसी एसम्बली अथवा सरकार से मुसलमान कहलावाने के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता है, किसी सर्टिफ़िकेट की आवश्यकता है। हम अपने आपको मुसलमान कहते हैं क्यूँकि हम मुसलमान हैं। हमें अल्लाह तआला ने और उसके रसूल ने मुसलमान किया है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। हम ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कलिमा पढ़ने वाले हैं। हम समस्त इस्लाम की आस्थाओं पर विश्वास रखते हैं, हम क़ुर्आन-ए-करीम पर ईमान रखते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन मानते हैं जैसा कि क़ुर्आन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है तथा इसकी मैंने अभी तिलावत की है। हम इस बात पर पूर्ण विवेक के साथ क़ायम हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। हम पर जो यह आरोप है कि हम ख़त्मे नबुव्वत के इन्कारी हैं और नऊज़ु बिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानते, यह बड़ा घटया और घोर आरोप है जो हम पर लगाया जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कई अरबी लोग जब वास्तविकता को जानकर बैअत करके अहमदियत में शामिल होते हैं तो वे यही बताते हैं कि जब हम अपने आलिमों से पूछते हैं कि जमाअत के बारे में क्या विचार है उनका तो वे इसी प्रकार की बातें हमें बताते हैं कि अहमदी क़ुर्आन-ए-करीम को नहीं मानते, उन्होंने अपना एक अलग क़ुर्आन बनाया हुआ है। ये आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्तिम नबी नहीं मानते बल्कि मिर्ज़ा साहब को आख़री नबी मानते हैं। इनका हज्ज भिन्न प्रकार का है, ये हज्ज नहीं करते। इनका क़िबला और है और ख़ाना कअबा की ओर मुंह करके नमाज़ नहीं पढ़ते और ये लोग कहते हैं कि जब हम खोज बीन करते हैं तो इन तथाकथित उलमा का पोल खुल जाता है और यही ग़ैर अहमदी मौलवी अपने झूठ के कारण अनेक लोगों के अहमदियत क़बूल करने का माध्यम बन जाते हैं। इस प्रकार ये मौलवी भी झूठ बोलकर हमारी तबलीग़ भी एक दृष्टि से कर रहे हैं।

यह कैसे हो सकता है कि हम क़ुर्आन-ए-करीम को न मानें और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन न मानें जबकि स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम क़ुर्आन-ए-करीम को ख़ुदा तआला की किताब कहते हैं तथा उसे सम्पूर्ण ख़ैर का स्रोत समझते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन कहते हैं। अतः आपका एक इलहाम है क़ुर्आन-ए-करीम के बारे में कि الخیر کله فی القرآن अर्थात- सम्पूर्ण भलाई क़ुर्आन-ए-करीम में है। इसी प्रकार आपने यह भी फ़रमाया कि जो क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आसमान पर सम्मान पाएँगे। यह कहीं नहीं फ़रमाया कि मेरे इलहामों को सम्मान दो। आपके इलहाम क़ुर्आन-ए-करीम के सेवक हैं इनका कोई अलग और वैध महत्त्व नहीं है। जो भी भलाईयाँ हमें तलाश करनी हैं, जो भी हिदायत हमें खोजनी है, समाज के किसी मामले के बारे में हमने निर्देश लेना है तो वह क़ुर्आन-ए-करीम से ही हम लेते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बहुत से इलहाम उनकी व्याख्या और स्पष्टीकरण भी करते हैं। इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने के बारे में असंख्य लेख हैं तथा इसके अतिरिक्त यह इलहाम भी है जिसमें ख़ातमुन्नबिय्यीन का शब्द भी आता है। इलहाम यह है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ وُلْدِ اٰدَمَ وَخَاتَمَ النَّبِیِّیْنَ

अर्थात- दरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तथा आले मुहम्मद पर जो सरदार है आदम के बेटों का तथा ख़ातमुन्नबिय्यीन है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। और यह इलहाम भिन्न भिन्न समय पर दो तीन बार हुआ है। फिर यह भी इलहाम है कि كُلُّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم अर्थात- प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से है। फिर आप अपनी किताब तजल्लियात-ए-इलाहिय्यः में लिखते हैं कि यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण न करता तो यदि दुनिया के समस्त पर्वतों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं यह शर्फ़-ए-मकालमः व मुख़ातबः (अल्लाह से बात चीत का वरदान) न पाता, क्यूँकि अब मुहम्मदी नबुव्वत के अतिरिक्त सारी नबुव्वतें बन्द हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आधीन हैं और आपके इलहाम भी क़ुर्आन-ए-करीम के आधीन और उसकी व्याख्याएँ हैं। यदि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहामों को नऊज़ु बिल्लाह क़ुर्आन-ए-करीम से बढ़कर समझते तो हम आजकल ख़र्च करके, आर्थिक बलिदान करके, दुनिया में क़ुर्आन-ए-करीम के अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं, उनके बजाए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम प्रकाशित करते। इस समय तक 75 भाषाओं में क़ुर्आन-ए-करीम के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं तथा कुछ भाषाओं में अभी अनुवाद का काम चल रहा है।111 भाषाओं में चयनित आयतों के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। बड़ी बड़ी इस्लामी सरकारें बताएँ तथा बड़ी पैसे वाली धार्मिक तंज़ीमें हैं वे तो ज़रा बताएँ कि उन्होंने कितनी भाषाओं में क़ुर्आन-ए-करीम के अनुवाद प्रकाशित किए हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ख़ातमुन्नबिय्यीन के वास्तविक अर्थ और आत्मा को भी हम अहमदी ही समझते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खातमुन्नबिय्यीन होने का प्रकाशन भी दुनिया के विभिन्न देशों में उनकी अपनी भाषाओं में अहमदी ही कर रहे हैं। फिर भी ये लोग आरोप लगाते हैं कि अहमदी नऊज़ु बिल्लाह ख़त्मे नबुव्वत के इन्कारी हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें ख़त्में नबुव्वत का यथार्थ, वास्तविकता तथा ज्ञान अता फ़रमाया है जिसके निकट भी ये लोग जो ख़त्मे नबुव्वत का झंडा उठाने के दावेदार हैं, नहीं पहुंच सकते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

यह भी याद रखना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानते, यह हम पर घोर आरोप है। हम जितनी विश्वास की शक्ति, विवेक और बसीरत के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अम्बिया मानते हैं तथा विश्वास रखते हैं इसका लाखवाँ अंश भी दूसरे लोग नहीं मानते। तथा उनकी ऐसी क्षमता भी नहीं है। तथा इस वास्तविकता और भेद को जो ख़ातमुल अम्बिया की ख़त्मे नबुव्वत में है समझते ही नहीं। उन्होंने केवल बाप दादा से एक शब्द सुना हुआ है परन्तु इसके यथार्थ से वंचित हैं और नहीं जानते कि ख़त्मे नबुव्वत क्या होता है तथा उस पर ईमान लाने का क्या अर्थ है। परन्तु हम पूर्ण विवेक से जिसको अल्लाह तआला बेहतर जानता है आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन समझते हैं और ख़ुदा तआला ने हम पर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता को इस प्रकार खोल दिया है कि इस विवेक के शरबत से जो हमें पिलाया गया है एक विशेष आनन्द पाते हैं जिसका अनुमान कोई नहीं लगा सकता केवल उन लोगों के अतिरिक्त जो इस स्रोत से लाभान्वित किए गए हों।

फिर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि हमें अल्लाह तआला ने वह नबी दिया है जो ख़ातमुल मोमिनीन, ख़ातमुल आरफ़ीन और ख़ातमुन्नबिय्यीन है। और इसी प्रकार उस पर वह किताब नाज़िल की है जो जामिअुलकुतब और ख़ातमुलकुतब है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और आप पर नबुव्वत ख़त्म हो गई तो यह नबुव्वत हर प्रकार से समाप्त नहीं हुई जैसे कोई गला घोंट कर ख़त्म कर दे। ऐसा ख़त्म गर्व करने योग्य नहीं होता बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत ख़त्म होने का अभिप्रायः यह है कि प्रकृति रूप से आप पर नबुव्वत के कमालात ख़त्म हो गए अर्थात वे समस्त विभिन्न कमालात जो आदम से लेकर मसीह इब्ने मरयम तक नबियों को दिए गए थे, वे सब के सब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में एकत्र कर दिए गए और इस प्रकार आप प्रकृतिक रूप से ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहरे और ऐसे ही वे सम्पूर्ण शिक्षाएँ, उपदेश तथा विवेक पूर्ण ज्ञान है जो विभिन्न पुस्तकों में चले आते थे, जो पहली शरीअतों में थे वे सब क़ुर्आन शरीफ़ पर आकर पूरे हो गए और क़ुर्आन शरीफ़ ख़ात्मुल कुतब ठहरा।

अतः यह है वह वास्तविकता जिससे हमारे विरोधी अनभिज्ञ हैं तथा लोग जो उलमा के चंगुल में फंसे हुए हैं वे उन्हें अपनी पकड़ से बाहर निकलने ही नहीं देना चाहते कि यदि यह वास्तविकता उनके पीछे चलने वालों का पता चल जाए तो फिर उन्होंने धर्म को जो व्यापार बनाया हुआ है, वह कारोबार उनका नहीं चल सकेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज अहमदिया जमाअत अपने पूरी शक्तियों तथा क्षमता के साथ तौहीद और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबुव्वत के स्तर की दुनिया के प्रत्येक गली, गाँव और कस्बे में फैला रही है। अतः हम हैं जो पूर्ण विवेक रखने वाले हैं ख़त्मे नबुव्वत का तथा आप पर उतरी हुई शरीअत का। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिन्होंने दूसरे धर्मों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर के विषय में खोल कर बताया और न केवल आपका स्तर बताया अपितु यह भी फ़रमाया कि पहले समस्त नबियों की शिक्षाएँ इतनी बदल चुकी हैं कि उन नबियों के स्तर और यथार्थ का पता नहीं चल सकता कि वे सच्चे भी थे कि नहीं। यह भी आप अलैहिस्सलाम का ही स्तर है जो पहले नबियों की वास्तविकता और सच्चाई बताई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल के उलमा आपस में तो एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं किन्तु यह साहस नहीं कि दूसरे धर्मों को उनका चेहरा दिखाकर उनकी कमज़ोरियाँ दिखाएँ और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उच्चतम स्तर प्रमाणित करें। यह काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तर्बियत और ज्ञान के साथ अहमदिया जमाअत ही कर रही है किन्तु फिर भी उनकी दृष्टि में हम काफ़िर और ये मोमिन।

हम मुसलमान हैं और हम ख़ुदा तआला की किताब फ़ुर्क़ान-ए-मजीद पर ईमान लाते हैं और यह भी यक़ीन रखते हैं कि हमारे आक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के नबी और उसके रसूल हैं और यह कि आप बेहतरीन दीन लेकर आए हैं और इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि आप ख़ात्मुल अम्बिया हैं और आपके बाद कोई नबी नहीं, किन्तु वही जिसकी तर्बियत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ान से हुई हो और जिस व्यक्ति ने क़ुर्आन शरीफ़ में कोई बदलाव किया अथवा कुछ वृद्धि की तो वह शैतान पापी है। और ख़त्मे नबुव्वत से हम यह अभिप्रायः समझते हैं कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो अल्लाह तआला के सब रसूलों और नबियों से बढ़कर हैं समस्त नबुव्वत के कमाल ख़त्म हो गए हैं और हम यह विश्वास रखते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नबुव्वत के स्तर पर वही व्यक्ति नियुक्त हो सकता है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से हो तथा आपका सम्पूर्णतः अनुसरण करने वाला हो तथा उसने पूरा का पूरा फ़ैज़ान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ही रूहानियत से पाया हो और आपके नूर से प्रकाशमान हुआ हो। इस स्तर में कोई अपमान नहीं और न ही यह अपमान का विषय है तथा यह कोई अलग नबुव्वत नहीं तथा न ही विचित्र बात है बल्कि यह अहमद मुजतबा ही है जो दूसरे दर्पण में प्रकट हुआ है और कोई व्यक्ति अपनी छवि पर जिसे अल्लाह ने अपने दर्पण में दिखाया हो, अपमान नहीं मानता क्यूँकि शिष्यों और बेटों के अपमान पर भावना जोश में नहीं आती। इस प्रकार जो व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ पाकर तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में फ़ना होकर आए वह वास्तव में वही है क्यूँकि वह सम्पूर्ण फ़ना के स्तर पर होता है तथा आपके रंग में ही रंगीन और आपकी ही चादर ओढ़े होता है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ही उसने अपना रूहानी अस्तित्व प्राप्त किया हुआ होता है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ से ही उसका अस्तित्व कमाल को पहुंचा हुआ होता है तथा यही वह हक़ है जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकतों पर गवाह है और लोग नबी करीम स. का सौन्द्रीय उन अनुसरण करने वालों के वेश में देखते हैं जो अपनी

कमाल मुहब्बत व सफ़ाई के कारण आपके वजूद में फ़ना हो गए तथा इसके विरुद्ध बहस करना मूर्खता है क्यूँकि यह तो आपके अबतर (निःसंतान) न होने का अल्लाह तआला की ओर से प्रमाण है तथा विवेक पूर्ण लोगों के लिए इसके विवरण की आवश्यकता नहीं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शारीरिक रूप से तो पुरुषों में से किसी के बाप नहीं लेकिन अपनी रिसालत के स्तर के अनुसार प्रत्येक उस व्यक्ति के बाप हैं जिसने रूहानियत में कमाल प्राप्त किया और आप समस्त नबियों के ख़ातम और समस्त मक़बूलों के सरदार हैं और अब ख़ुदा तआला के दरबार में वही व्यक्ति दाख़िल हो सकता है जिसके पास आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहर की छवि हो तथा आपकी सुन्नत पर पूर्ण रूप से अमल करता हो और अब कोई अमल और इबादत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के इक़रार के बिना और आपके दीन पर दृढ़ संकल्प रहने के बिना ख़ुदा तआला के समक्ष स्वीकारीय नहीं होगी और जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अलग हो गया और उसने अपने सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार आपका अनुसरण न किया, वह नष्ट हो गया। आपके बाद अब कोई शरीअत नहीं आ सकती तथा न कोई आपकी किताब और आपके आदेशों को काट सकता है और न आपके कलाम को बदल सकता है तथा न कोई बारिश आपकी मूसलाधार बारिश के समान हो सकती है और जो क़ुर्आन-ए-करीम की अर्थात रूहानी वर्षा, और जो क़ुर्आन-ए-करीम के अनुसरण से तनिक भी दूर हुआ वह ईमान की परिधि से बाहर निकल गया तथा उस समय तक कोई व्यक्ति सफल नहीं हो सकता जब तक वह उन समस्त बातों का आज्ञा पालन न करे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हैं और जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपदेशों में से कोई छोटी सी नसीहत भी छोड़ दी तो वह पथभ्रष्ट हो गया और जिसने इस उम्मत में नबुव्वत का दावा किया तथा यह विश्वास न रखा कि वह ख़ैरुल बशर मुहम्मद मुस्तुफ़ा स. के द्वारा ही प्रशिक्षित है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण के बिना तुच्छ है, कोई महत्त्व नहीं उसका और यह कि क़ुर्आन-ए-करीम ख़ात्मुल शराए है, तो वह नष्ट हो गया तथा काफ़िरों और पापियों में जा मिला और जिस व्यक्ति ने नबुव्वत का दावा किया तथा यह आस्था न रखी कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से है और यह कि जो कुछ उसने पाया है वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ही फ़ैज़ान से पाया है और यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के बाग़ का एक फल है और आप ही की मूसलाधार बारिश की एक बून्द है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाश की ही एक किरण है तो वह धिक्कृत है और उस पर तथा उसके साथियों पर और उसके अनुसरण पर तथा उसके सहयोगियों पर अल्लाह तआला की धिक्कार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- आसमान के नीचे मुहम्मद मुजतबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त हमारा कोई नबी नहीं तथा क़ुर्आन-ए-करीम के अतिरिक्त हमारी कोई किताब नहीं तथा जिसने भी इसका विरोध किया वह अपने आपको नर्क की ओर खींच कर ले गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आपने अंसख्य स्थानों पर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता तथा उसके स्तर तथा उसकी तुलना में अपने स्तर और महत्त्व का वर्णन फ़रमाया है।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इसी प्रकार अहमदियों पर यह आरोप किए जाते हैं कि ये क़ौम की सेवा नहीं करते, ये क़ौम के वफ़ादार नहीं हैं परन्तु मैं ये पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आज पाकिस्तान में अहमदी ही हैं जो **हुब्बुल वतनि मिनल ईमान** पर विश्वास रखते हैं तथा इसके अनुसार अमल करते हैं। अपना जान माल क़ुर्बान करने वाले हैं और कर रहे हैं। राजनैतिक व्यापार चमकाने के लिए केवल भाषण देने वाले नहीं हैं तथा न ही हमारा राजनीति से कोई सम्बंध है। हम धर्म के लिए जान देने वाले तो हैं परन्तु धर्म के नाम पर राजनीति चमकाने वाले तथा धर्म के नाम पर ख़ून करने वाले नहीं हैं। हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन तो मानते हैं तथा दिल से मानते हैं तथा आपके सम्मान के लिए प्रत्येक बलिदान देते हैं और देने के लिए तय्यार हैं और दे रहे हैं और इन्शाअल्लाह देते रहेंगे। पाकिस्तानी अहमदी का कर्त्तव्य है कि यह दुआ करता रहे कि अल्लाह तआला इस देश को जिसके लिए अहमदियों ने बड़े बलिदान दिए हैं, आरम्भ से लेकर अब तक क़ुर्बानियाँ दे रहे हैं, उसे अल्लाह तआला सदैव सलामत रखे तथा अत्याचारी लीडरों और स्वार्थी उलमा से उसे बचाए तथा विश्व के स्वतंत्र और सम्मानित देशों में पाकिस्तान की भी गणना होने लगे।

TOLL FREE NO: 180030102131